बच्चों की परवरिश में पिता की भूमिका

अर्बन95 अध्ययन में बच्चों के लालन-पालन में पिता की भूमिका से जुड़े कई तथ्य आये सामने

अर्बन95 परियोजना के अंतर्गत उदयपुर में छोटे बच्चों के अभिभावकों और सेवा प्रदाताओं के साथ हुई बैठकों में एक चीज़ ने बहुत ध्यान आकर्षित किया। लगभग हर जगह प्राथमिक अभिभावकों (प्राइमरी केयरगिवर) और सेवा प्रदाताओं (प्राइमरी सर्विस प्रोवाइडर) के नाम पर महिलाएं ही थी। हालाँकि पार्क में केयरटेकर के रूप में कुछ पुरुष साथी मिले, किन्तु उनका भी बच्चों से जुड़ी ज़रूरतों के बारे में ज्ञान न के बराबर था या वे उस तरफ सोच ही नहीं पा रहे थे! हमने कुछ पुरुष अभिभावकों के साथ बात करने की कोशिश की किन्तु बैठकों में उनकी उपस्थिति अपेक्षाकृत काफी कम रही।

हम सभी जानते हैं कि किसी बच्चे की परवरिश में माता और पिता; दोनों की ही अहम् भूमिका है। अनेक रिसर्च यह साबित कर चुके हैं कि बच्चे का मस्तिष्क विकास उसके शुरूआती २-३ सालों में ही ८०% से अधिक हो चुका होता है। ऐसे में बहुत ज़रूरी था कि हम इस मसले को और गहराई से समझें। इसी कवायद में अर्बन95 टीम द्वारा अपने कार्य के दौरान चयनित आंगनवाड़ी केन्द्रों, प्ले स्कूलों, मोहल्लो के पार्क, सिटी पार्क, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और कुछ मोहल्लों में महिलाओं, पुरुषों और सेवा प्रदाताओं (सर्विस प्रोवाईडर्स) से विषय केन्द्रित बातचीत की।

माताओं से इस मुद्दे पर बात करने के दौरान उन्होंने हमें बताया कि-

- घर के अधिकांश पुरुष सदस्य बच्चों को लेकर बहुत ज्यादा ध्यान नहीं देते। बच्चे के साथ थोड़ी देर तक लाड़ लड़ाने (प्यार-दुलार) से ज्यादा नहीं !
- शाम के समय काम से लौटने के बाद फोन या दोस्तों के लिए समय होता है पर अपने बच्चे के लिए नहीं !
- सप्ताहांत पर पूरे-पूरे दिन सोते रहेंगे या टीवी देखते रहेंगे पर बच्चे के साथ “क्वालिटी” समय नहीं बिताएंगे।
- रात को अगर बच्चा रोने लग जाए तो पतिदेव चिड़चिडे हो जाते हैं।
- बच्चों के सामने अक्सर फोन पर बात करते समय या गुस्सा आने पर अपशब्दों का इस्तेमाल करते हैं।
- जब घर में बच्चे को सँभालने वाला कोई और नहीं होता अथवा बाज़ार या घर के बाहर जाने पर साथ चलने वाला कोई नहीं होता तो छोटे बच्चे के साथ बाहर निकलना दुष्कर हो जाता है। ट्राफिक में बच्चों की अंगुली थामना या उन्हें गोदी में उठाकर चलना एक अकेली महिला के लिए मुश्किल होता है। ऐसे में अगर साथ में घरेलु सामान की थैलियाँ हो तो मुश्किल बढ़ जाती है। सड़क पार करते समय बहुत ही ज्यादा परेशानी होती है।
- कई मोहल्लों में बुज़ुर्ग पुरुष घरों के बाहर बैठे होते है या चाय की थड़ी पर जमघट लगाये होते हैं, ऐसी स्थिति में घूंघट के साथ बच्चे को लेकर चलने में परेशानी होती है और कई बार हमें रास्ता बदलकर ज्यादा लम्बे या असुरक्षित रास्तों से गुज़रना होता है। (दक्षिणी और पश्चिमी राजस्थान में, बुजुर्गों के सामने घूंघट करना महिलाओं के लिए ज़रूरी हो जाता है)
- कुछ पिता छोटे बच्चों को मोटरसाइकिल पर घुमाने ज़रूर ले जाते हैं पर वो बहुत खतरनाक होता है। बिना सपोर्ट के बच्चे को आगे या पीछे बिठा लेते हैं।

इनसे मिलते-जुलते कई और चर्चा बिंदु भी निकले; मसलन पार्क में बच्चों के साथ आने के बावजूद पिता फोन में खोये रहते हैं या अस्पताल जाते समय उनका काम केवल उन्हें छोड़ना या वापस लेने आना होता है। डॉक्टर या नर्स से चर्चा के लिए ले जाओ तो ऐसे जताते हैं जैसे उन्हें सब आता है।

ये भी देखने को मिला कि कई परिवार ऐसे थे, जो पिछले कुछ सालों में ही आस-पास के गांव-कस्बों या अन्य शहरों से उदयपुर में शिफ्ट हुए हैं। ऐसे में इनके साथ घर के अन्य बुज़ुर्ग या परिवार के अन्य सदस्य नहीं होते। ऐसे में अकेली महिला के लिए बच्चे को संभालना मुश्किल हो जाता है। न बच्चे को घर पर अकेला छोड़ा जा सकता है और न ही साथ में लेकर बाज़ार जाया जा सकता है!

इसी विषय पर हमने सेवा प्रदाताओं से बातचीत करते हुए उनके पक्ष को भी जानने की कोशिश की। आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं, आशा, स्कूल टीचर्स और डॉक्टर- नर्स समूहों के साथ बातचीत में भी इस बात की पुष्टि हुई कि पिता अपने रोल को लेकर हिचक में है। उन्हें बैठकों में बुलाओ तो नहीं आते। होम विजिट्स में जाओ तो नहीं मिलते। बच्चों के टीकाकरण के समय बुलाओ तो भी १० में से केवल ३ पिता ही आते हैं। परामर्श या सलाह (काउंसिलिंग) के लिए भी इन तक पहुँच मुश्किल होती है। सुन भी लेंगे तो उसे अमल में नहीं लाते! उनका ये भी कहना था कि इसमें गरीब-अमीर, बड़े घर या छोटे घर, रंग- वर्ण-जाति आदि कोई फेक्टर ख़ास नज़र नहीं आता। कमोबेश हर जगह पुरुषों का रोल कम ही नज़र आता है। उन्होंने कहा कि कुछ पुरुष ज़रूर आते हैं किन्तु उनके "एटीट्युड" को देखकर अब लगता है कि ज्यादा बेहतर है कि केवल माओं से बात की जाए।

क्या कहते हैं पिता ?

इस बारे में पिताओं का भी पक्ष जानने की हमारी कोशिश रही। उनके अनुसार वे बच्चों को खूब समय देते हैं। जहाँ ज़रूरत महसूस होती है, वे वहां मौजूद होते हैं। हालाँकि ज्यादा गहराई से बात करने पर उनका ये मानना था कि उनकी बीवियां, जो पूरे दिन घर में रहती है (या उनकी अपेक्षा कम मेहनत का काम करती है) अगर वो बच्चों को रख रही है तो क्या गलत है ! वैसे भी पुरुषों के जिम्मे ज्यादा जिम्मेदारियां है! उनके अनुसार घर के बाहर परिवारों के साथ जाने के दौरान वे साथ होते ही हैं। हमारे ये पूछने पर कि वे आखिरी बार परिवार के साथ पार्क कब गए? -वे बगलें झांकते नज़र आये। नियमित तौर पर उन्होंने पार्क जाने से मना किया किन्तु कभी कभी ज़रूर गए हैं। उन्होंने घर में बुजुर्गों की अहमियत को ज़रूर माना किन्तु खुद के लिए सिर्फ इतना कहा कि दिन भर की थकान के बाद इतनी हिम्मत नहीं बचती कि बच्चों के साथ खेला जाए!

अवलोकन में भी माताएं मिली ज्यादा

इस दौरान अवलोकन में पाया गया कि ज्यादातर स्थानों पर बच्चों के साथ माताएं ही थी।

समय	अभिभावक	आंगनवाड़ी केंद्र (कुल २०)	प्ले स्कूल (कुल ०४)	अस्पताल (कुल ०६)	पब्लिक पार्क (कुल ०८)
सुबह के समय	छोटे बच्चों के साथ महिलाएं	**७७%**	**६४%**	**६६%**	**७५%**
	छोटे बच्चों के साथ पुरुष	**२३%**	**३६%**	**३४%**	**२५%**
अपरान्ह/शाम के समय	छोटे बच्चों के साथ महिलाएं	**७८%**	**५५%**	**-**	**६१%**
	छोटे बच्चों के साथ पुरुष	**२२%**	**४५%**	**-**	**३९%**

कहाँ और कितने लोगों से हुई चर्चा ?

अर्बन95 परियोजना के अंतर्गत शुरुआत में ४० से अधिक स्थानों का चयन किया गया। इनमे आंगनवाड़ी केंद्र, निजी प्ले स्कूल, पार्क, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, चयनित मोहल्ले आदि शामिल थे। एक तरफ जहाँ नीमचखेड़ा (अल्प आय वर्ग क्षेत्र), देवाली (मध्यम आय वर्ग) जैसे क्षेत्र शामिल किये गए, वहीँ अशोक नगर और सहेली नगर (मध्यम एवं उच्च आय वर्ग) जैसे आवासीय क्षेत्र भी इस में शामिल थे। इस दौरान तकरीबन २०० से अधिक अभिभावकों से बातचीत की गयी। इसमें माताएं, पिता, अन्य अभिभावक और सेवा प्रदाता आदि शामिल रहे।

क्या कहते हैं विशेषज्ञ ?

इस विषय से जुड़े विशेषज्ञों का मानना है कि देखभाल करने वालों के साथ बातचीत छोटे बच्चों में सामाजिक और संचार कौशल के विकास को सुविधाजनक बनाती है। इशारों और बातचीत के माध्यम से, देखभालकर्ता बच्चों से बात करने, दूसरों की भावनाओं को समझाने और सामाजिक परिस्थितियों से निपटना सिखाते हैं। देखभाल करने वाले बच्चों को उनकी भावनाओं को नियंत्रित करने और नियंत्रित करने में मदद करने में ज़रूरी भूमिका निभाते हैं। पढ़ने, गाने और खेलने जैसी गतिविधियों में संलग्न होने से न केवल बौद्धिक विकास को बढ़ावा मिलता है, बल्कि देखभाल करने वाले और बच्चे का बंधन भी मजबूत होता है, जिससे सकारात्मक मानसिक विकास को बढ़ावा मिलता है।

एक पिता देखभालकर्ता के रूप में पालन-पोषण के लिए एक अलग दृष्टिकोण लेकर आते हैं। ये दृष्टिकोण माताओं के पूरक होते हैं। यह विविधता बच्चों के अनुभवों को समृद्ध करती है और उन्हें संबंधों की व्यापक समझ को विकसित करने में मदद करती है। एक बच्चा अगर शुरुआती सालों में अपने पास अपने पिता या किसी पुरुष देखभालकर्ता को नहीं पाता तो वह सहानुभूति, सहयोग और समस्या समाधान में महिला-पुरुष के रोल जैसे महत्वपूर्ण जीवन कौशल और मूल्यों को समझते की अपनी समझ विकसित नहीं कर पाता।

जेंडर जैसे विषयों पर काम कर रहे विशेषज्ञ कहते हैं कि सामाजिक मान्यताएं और पारंपरिक जेंडर आधारित भूमिकाएँ अक्सर इस बात को प्रभावित करती हैं कि व्यक्ति माता-पिता के रूप में अपनी भूमिकाएँ कैसे समझते हैं और उन्हें कैसे निभाते हैं। एक बच्चे को बड़े करने को लेकर समाज, अक्सर औरत और मर्द के लिए अलग-अलग रोल और भूमिकाएं तय करता है। अक्सर, माताएं पालन-पोषण और देखभाल से जुड़ी रही हैं, जबकि पिता से प्रदाता (प्रोवाइडर) और रक्षक होने की उम्मीद की गई है। ये अपेक्षा पितृत्व को समझने और अनुभव करने के तरीके को प्रभावित करती है और बच्चे से खुद को धीरे-धीरे दूर करती है। पिता घर के बाहर काम, अपने दोस्तों और "खुद में" इतना व्यस्त होने लगता है कि बच्चे उसकी प्राथमिकता में नहीं रह पाते।

अर्बन95 परियोजना की पहल

आईसीएलइआई साउथ एशिया द्वारा नगर निगम उदयपुर एवं वेन लीयर फाउंडेशन और इकोरस इण्डिया के साझे में संचालित अर्बन95 परियोजना के अंतर्गत इस विषय पर खासा ध्यान दिया जा रहा है कि बच्चों की सकारात्मक परवरिश (पॉजिटिव पेरेंटिंग) में पुरुषों के रोल को कैसे बढ़ाया जाए। नीमच खेड़ा एवं अशोक नगर "शिशु प्राथमिकता क्षेत्र" (चाइल्ड प्रायोरिटी ज़ोन) विकास में इस विषय पर काफी ध्यान दिया जा रहा है। ढांचागत विकास में पुरुषों के रोल को लेकर जहाँ विभिन्न सूचना प्रसारण के तरीके आजमाए जाने की योजना है, वहीँ रेडियो एफएम, सोश्यल मीडिया इन्फ़्ल्युएन्सर सहित अन्य प्रभावी लोगों के साथ संवाद, चाय पे चर्चा जैसी आजमाए हुए तरीकों सहित कुछ नए संचार माध्यमों पर भी काम करने की योजना है। स्थानीय अभिभावकों के वाट्सएप ग्रुप बनाकर उसमे कुछ सफल कहानियों और पोस्टरों के माध्यम से भी जुड़ने की संभावनाएं तलाशी जा रही है। अर्बन95 परियोजना के अंतर्गत तैयार हो रहे "प्रारम्भिक बाल्यावस्था पालिसी फ्रेमवर्क" (इसीडी फ्रेमवर्क) और "बाल सुरक्षा निर्देश" (चाइल्ड सेफ्टी गाइडलाइन) में भी इस विषय को संजीदगी से छुआ गया है। नगर निगम उदयपुर अपने परिक्षैत्र में छोटे बच्चों के विकास से सम्बंधित ज़रूरतों को पूरा करते हुए पुरुषों के रोल को बढाने के लिए कैसे पहल कर सकती है, इस पर भी व्यापक प्रकाश डाला गया है।

लेख : ओम (प्रारम्भिक बाल्यावस्था विषय विशेषज्ञ), अर्बन95, उदयपुर